IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

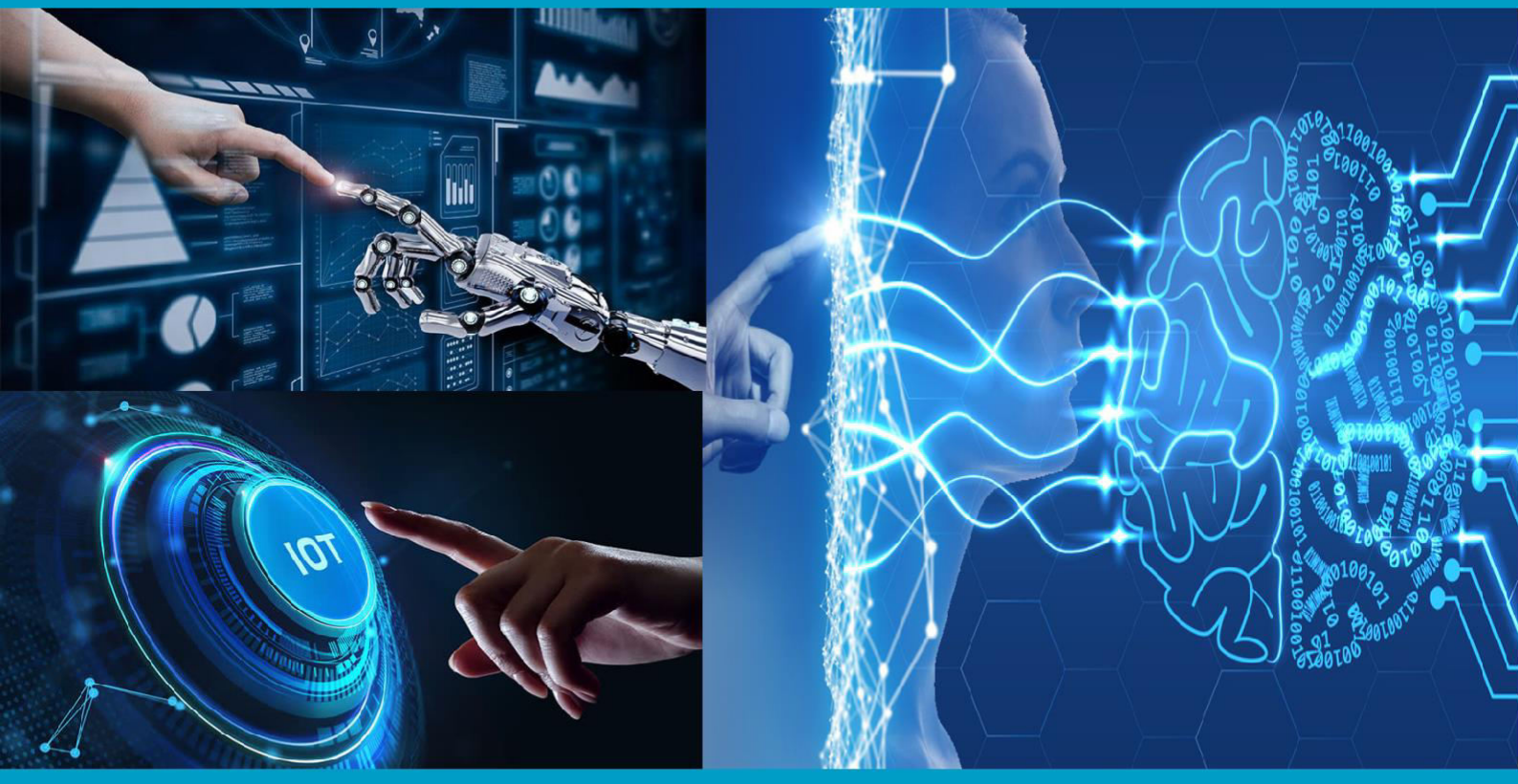

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 5, May 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 5, May 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2021.0905023 |

भारतीय समाज और सोशल मीडिया : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

[1]डॉ. महेंद्र थोरी & [2]डॉ. सुनीता मंडा

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महारानी सुदर्शन कन्या महाविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान

सार

फेसबुक, ट्विटर जैसे अन्य सोशल मीडिया (Social Media- SM) प्लेटफार्मों की अभूतपूर्व वृद्धि लोकतंत्रों के कामकाज में एक दोधारी तलवार साबित हो रही है। एक ओर इसने सूचना तक पहुँच का लोकतांत्रिकरण किया है, वहीं दूसरी ओर इसने नई चुनौतियाँ भी पेश की है जो अब सीधे हमारे लोकतंत्र और लोगों पर प्रभाव डाल रही हैं। भारत में वर्ष 2019 तक 574 मिलियन सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्त्ता थे।इंटरनेट प्रयोग करने के मामले में चीन के बाद भारत दूसरे स्थान पर है।एक अनुमान के अनुसार, दिसंबर 2020 तक भारत में लगभग 639 मिलियन सक्रिय इंटरनेट उपयोगकर्ता होंगे।भारत के अधिकांश इंटरनेट उपयोगकर्त्ता मोबाइल फोन इंटरनेट उपयोगकर्त्ता हैं।वर्ष 2019 में भारत में कुल डेटा (4G डेटा उपभोग के साथ) ट्रैफिक में 47% की वृद्धि हुई है। देश भर में खपत होने वाले कुल डेटा ट्रैफिक में 4G की भागीदारी 96% है जबकि 3G डेटा ट्रैफिक में 30% की उच्चतम गिरावट दर्ज की गई। सोशल मीडिया ज्ञान और व्यापक स्तर पर संचार सुविधाओं का लोकतंत्रीकरण करता है।विश्व भर के अरबों लोगों ने अब सूचना को संरक्षित रखने और इसका प्रसार करने के पारंपरिक माध्यमों को चलन से लगभग बाहर कर दिया है। वे सिर्फ इसके उपभोक्ता ही नहीं सामग्री के निर्माता और प्रसारकर्त्ता भी बन गए हैं।

परिचय

आभासी दुनिया का उदय ऐसे लोगों को अपनी आवाज़ को मुखर करने का अवसर प्रदान करता है जिन्हें या तो अभी तक सुना नहीं जाता था अर्थात् समाज का अपेक्षित आभासी दुनिया के माध्यम से ये लोग दूसरे लोगों से जुड़ते हैं और स्वयं को स्थापित कर पाते हैं। अगर व्यवसाय के रूप में देखें तो कई YouTubers का उदय इस घटना का प्रमाण है।भौतिक समुदायों की तुलना में ऑनलाइन समुदाय भौगोलिक रूप से बहुत व्यापक और अधिक विषम हैं।अतीत में भारत में कई समुदायों को सार्वजनिक प्रवचनों में भाग लेने, खुद को संगठित करने तथा अपनी सोच और विचारों को आगे बढ़ाने की अनुमति नहीं थी। उनकी चिंताओं, विचारों, अनुभवों, महत्त्वाकांक्षाओं और मांगों को काफी हद तक अनसुना कर जाता था।सोशल मिडिया के लिये आवश्यक कंटेंट के निर्माण में ईंट और चूने पत्थर या किसी अन्य भौतिक पदार्थ की तुलना में कम निवेश की आवश्यकता होती है। यह अक्सर मृदु-कौशल से संचालित होता है।प्रौद्योगिकी की सहायता से कोई भी व्यक्ति सक्षम, प्रामाणिक, प्रभावी और मौलिक ऑनलाइन कंटेंट तैयार कर सकता है।

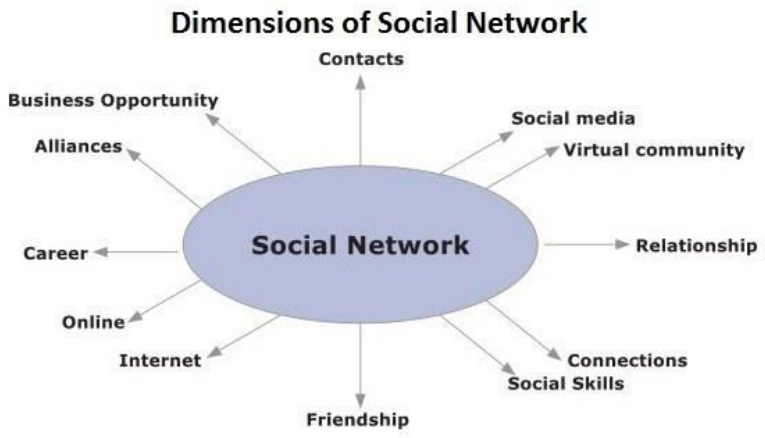

सोशल मीडिया भी पारंपरिक खिलाड़ियों के आधिपत्य या रिवायत का मुकाबला करने के लिये एक उपकरण के रूप में कार्य करता है।इसने विश्व में ज्ञान का एक वैकल्पिक स्रोत प्रदान किया है, जिससे मुख्यधारा का मीडिया फर्जी खबरों और प्रचार-प्रसार

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 5, May 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2021.0905023 |

के लिये गंभीर सार्वजनिक आलोचनाओं के घेरे में आ गया है। सोशल मीडिया ने लोगों के बीच की दूरी को भी समाप्त करने का काम किया है।दोस्त और परिवार अब दूर होने के बावजूद भी व्हाट्सएप और अन्य एप के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े रहते हैं।आज सोशल मीडिया ने आम लोगों को सरकार से सीधे बातचीत करने और सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने का अधिकार दिया है।आम लोग अपने सवाल या परेशानियों को रेलवे और अन्य मंत्रालयों को पोस्ट कर देते हैं, जो इन दिनों आम खबर है।पिछले कुछ समय से कई मामलों में हिंसा और जान-माल की क्षति के लिये नफरत फैलाने वाले भाषण और अफवाहें ज़िम्मेदार रहे हैं।हाल ही का एक मामला है जब महाराष्ट्र के पालघर के गडचिंचल गाँव में दो साधुओं और उनके ड्राइवर की हत्या कर दी गई।व्हाट्सएप मैसेज द्वारा यह अफवाह फैलाई गई कि क्षेत्र में तीन चोर चोरी कर रहे हैं, इस अफवाह के चलते गाँव के एक समूह ने तीनों यात्रियों को चोर समझकर उनकी हत्या कर दी थी। हस्तक्षेप करने वाले कई पुलिस कर्मियों पर भी गाँव वालों ने हमला कर दिया जिससे वे घायल हो गए।2020 के दिल्ली दंगों में सोशल मीडिया पर हुए द्वेषपूर्ण भाषण की बड़ी भूमिका थी।वर्ष 2019 माइक्रोसॉफ्ट द्वारा 22 देशों में किये गए सर्वेक्षण के अनुसार, 64% से अधिक भारतीय फर्जी खबरों का सामना करते हैं।सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों और व्हाट्सएप जैसी मैसेजिंग सेवाओं के माध्यम से प्रसारित एडिटेड इमेज, हेरा-फेरी वाले वीडियो और झूठे संदेशों की एक चौंका देने वाली संख्या मौजूद है जिससे गलत सूचनाओं और विश्वसनीय तथ्यों के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है।

ट्रोलिंग सोशल मीडिया का नया उप-उत्पाद है।कई बार लोग कानून अपने हाथ में ले लेते हैं, लोगों को ट्रोल करना और धमकाना शुरू कर देते हैं जो उनके विचारों या आख्यानों से सहमत नहीं होते हैं।इसने किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा पर हमला करने वाले गुमनाम ट्रोल को भी बढ़ावा दिया है।महिलाओं को साइबर रेप और अन्य खतरों का सामना करना पड़ता है जो उनकी गरिमा को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं।कभी-कभी उनकी तस्वीरें और वीडियो को साइबर पर लीक कर देने की धमकी दी जाती है।कभी-कभी उनकी तस्वीरें और वीडियो लीक हो जाते हैं जिसके कारण उन्हें साइबर अपराध के लिये मजबूर किया जाता है।कई सोशल मीडिया केंद्रों ने कुछ विशेष प्रकार की सामग्री को बढ़ावा देने या फिल्टर करने के लिये स्वचालित और मानव संचालित एडिटेड प्रक्रियाओं का मिश्रण तैयार किया है।ये AI इकाइयाँ स्वचालित रूप से किसी छवि या समाचार को साझा करने पर हर बार गलत रिपोर्टिंग के खतरे को भांप लेंगी।इस अभ्यास को और अधिक दृढ़ता के साथ कार्यान्वित किया जाना चाहिये।यह एक ऐसा तरीका है जहाँ फर्जी जानकारी के साथ कंटेंट की वास्तविक सुचना भी पोस्ट की जाती है ताकि उपयोगकर्त्ताओं को वास्तविक जानकारी और सच्चाई से अवगत कराया जा सके।YouTube द्वारा लागू किया गया यह तरीका उपयोगकर्त्ताओं को नकली या घृणित सामग्री में किये गए भ्रामक दावों को खत्म कर देगा तथा सत्यापित और सुव्यवस्थित जानकारी वाले लिंक पर क्लिक करने के लिये प्रोत्साहित करता है।सोशल मीडिया के लगातार बढ़ते दायरे का सामना करने के लिये एक संपूर्ण राष्ट्रीय कानून होना चाहिये।इस संबंध में ज़िम्मेदारी तय होनी चाहिये और कानूनी प्रावधान होने चाहिये।वर्तमान में देश को डिजिटल साक्षर बनाए जाने की ज़रूरत है।एक ज़िम्मेदार सोशल मीडिया का उपयोग कैसे किया जाए, इस विषय में देश के प्रत्येक स्कूल और कॉलेज एवं विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में इसका परिक्षण किया जाना चाहिये, जहाँ लोग उन्हें बेवकूफ बनाकर अपना काम आसानी से निकाल लेते हैं।भारत निर्वाचन आयोग (Election Commission of India- ECI) ने चुनाव के समय में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फर्जी खबरों और गलत सूचना के प्रसार पर अंकुश लगाने के कई उपायों की घोषणा की थी।इसने राजनीतिक दलों के सोशल मीडिया कंटेंट को आदर्श आचार संहिता के दायरे में लाया गया और उम्मीदवारों को अपने सोशल मीडिया खातों तथा उनके संबंधित सोशल मीडिया अभियानों पर सभी खर्चों का खुलासा करने के लिये कहा था।इसी प्रकार सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (Ministry of Information & Broadcasting) की मीडिया विंग विभिन्न सरकारी मीडिया प्लेटफॉर्मों की गतिविधियों पर नज़र रखने में सरकार के विभिन्न संगठनों की सहायता करती रही है।इस तरह की गतिविधियों को सभी पैमानों और संस्थानों में प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।जैसा कि भारत एक निगरानी राज्य नहीं है, इसलिये निजता, बोलने और अभिव्यक्ति के स्वतंत्रता के अधिकार पर कोई गैर-कानूनी या असंवैधानिक जाँच नहीं होनी चाहिये जो प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार हैं। इसमें एक संतुलन होना चाहिये क्योंकि संविधान ने भाषण और अभिव्यक्ति के अधिकार पर कई सीमाएँ लगाई है।बड़ी प्रौद्योगिकी फर्में, जिनके पास सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं, कंटेंट के संदर्भ में मध्यस्थता कर सकती हैं और इस प्रकार लोकतंत्र को प्रभावित कर सकती हैं।उन्हें और सभी को अपने कार्यों के लिये उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिये, जिसके व्यापक सामाजिक प्रभाव होते हैं।

विचार-विमर्श

सोशल मीडिया 21वीं सदी की नई ऊर्जा से भरपूर नया चेहरा है। इसने विश्वव्यापी चिंतन के आयामों में परिवर्तन किया है। समाज में बड़े बदलाव की नींव रखी है। निसंदेह कोई भी परिवर्तन एकपक्षीय नहीं होता। वह हमेशा अपनी तमाम खूबियों और अच्छाइयों के बावजूद अनेक यक्ष प्रश्न भी साथ लेकर आता है। सोशल मीडिया इसका अपवाद नहीं है। समाज की उन्नति, प्रगति और विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाने के बावजूद सोशल मीडिया पूर्णत: निरापद नहीं है। यद्यपि आज सोशल मीडिया का उपयोग समाज के सभी आयु वर्ग के लोग कर रहे हैं। घर बैठे ही आभासी दुनिया में सभी समूह आपस में संवाद कर अपने विचारों को एक -दूसरे से साझा कर नई बौद्धिक दुनिया को सृजित कर रहे हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 5, May 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2021.0905023 |

प्रसिद्ध संचार वैज्ञानिक मैगीनसन ने कहा था कि संचार समानुभूति की प्रक्रिया है। यह समाज में रहने वाले सदस्यों को आपस में जोड़ती है। संचार की यह विकास यात्रा कबूतर से प्रारंभ होकर टेलीग्राफ, चिट्ठी, पोस्टकार्ड, एसटीडी, आईएसडी, प्रिंट मीडिया, रेडियो, टीवी आदि से होती हुई अपने विकास क्रम में आज फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्विटर, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, मैसेंजर, यू ट्यूब, जीमेल इत्यादि की उन्नत और आधुनिक तकनीक तक पहुंच गई है। सोशल मीडिया के इस नए रूप के बिना सहज और सामान्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यह भी कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया परंपरागत मीडिया का ही आधुनिक संस्करण है। इसका स्वरूप अत्यंत विराट, बहुआयामी, सर्वशक्तिशाली, प्रभाव में अत्यंत चमत्कारी और चरित्र से जनतांत्रिक है ।
सामाजिक समरसता, सामाजिक सरोकार, सामाजिक एकजुटता, सामूहिक चेतना और जन आंदोलनों आदि के लिए सोशल मीडिया की उपादेयता वैश्विक स्तर पर मान्य है। इसीलिए मीडिया और समाज का रिश्ता अभिन्न है। अटूट है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में यह लोकतंत्र की आत्मा का रक्षा कवच है।

वस्तुतः सोशल मीडिया एक मनोरंजक शब्द युग्म है। जनसंचार का यह माध्यम अभिव्यक्ति के विस्तार का प्रभावी मंच है। यह न सिर्फ समाज के दर्पण होने का दावा मुखर करता है वरन प्रत्यक्षतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचारों को बिना किसी भेदभाव के सार्वजनिक रूप से उजागर करने के अवसर भी उपलब्ध कराता है। इसका नेटवर्क इतना विराट है कि समग्र विश्व को इसने अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया है। संसार का कोई भी क्षेत्र सोशल मीडिया से न तो छूटा है न ही अछूता है। चाहे वह अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करने का प्रश्न हो या विश्वव्यापी कोरोना महामारी से जंग लड़ने की चुनौती।कला संस्कृति, साहित्य और खेलकूद को नये आयाम देकर सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने की पहल हो या छोटे से छोटे स्थानों से भी उभरती हुई प्रतिभाओं, कलाकारों और खिलाड़ियों को प्रसिद्ध हस्तियां बनने के लिए सार्थक मंच उपलब्ध कराने का अवसर हो। सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की आजादी को भी नए आयाम दिए हैं। महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध अपराधों और यौन शोषण की घटनाओं के विरुद्ध हैश टैग मी टू' जैसे परिणाम मूलक अभियानों के माध्यम से बच्चों और महिलाओं के अधिकारों की पैरवी गंभीरता के साथ की है। यही नहीं कार्यपालिका और व्यवस्थापिका पर सकारात्मक दवाब निर्मित कर जनहितैषी योजनाओं के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है। इस प्रकार सोशल मीडिया ने लोकतंत्र की आत्मा के सुरक्षा कवच के रूप में कार्य कर लोकतंत्र के चौथे स्तंभ होने की संज्ञा को भी साकार किया है। पिछले दिनों संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अफ्रीकी अमेरिकी युवक की मौत पर प्रतिरोध के जनसैलाब को आंदोलित करने में सोशल मीडिया की केन्द्रीय भूमिका रही है। सोशल मीडिया के पक्ष में उत्कृष्ट और सराहनीय कार्यों की एक लंबी श्रृंखला है। बावजूद इसके सामाजिक सद्भाव के तानेबाने को नफरत और हिंसा की आग में झुलसाने वाले संदेशों, भाषणों, फेक न्यूज और हेट स्पीच की बाढ़ ने सोशल मीडिया की विश्वसनीयता, निष्पक्षता और प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

सोशल मीडिया के कतिपय माध्यम ऐसे भी हैं जो ' जिसकी देखें तवे परात उसकी गावें सारी रात ' की तर्ज पर कार्य कर राजनीतिक दलों के हितार्थ नैतिक मूल्यों और आदर्शों को तिरोहित कर अपने निजी स्वार्थों के लिए किसी की भी छवि विकृत कर उनका चरित्र हनन अथवा चरित्र हत्या कर रहे है। दुनिया के अनेक लोकतांत्रिक देशों की संप्रभुता के लिए ट्रोल आर्मी और टुकड़े टुकड़े गैंग के उत्पातों ने गंभीर खतरा पैदा किया है। आभासी दुनिया में किसी व्यक्ति के बारे में मनगढ़ंत झूठी भ्रामक सूचना फैलाकर अपराधी सिद्ध किया जा रहा है। फलस्वरुप अनियंत्रित हिंसात्मक भीड़ उस व्यक्ति की सरेआम हत्या कर देती है। ऐसी घटनाओं पर भारत का सुप्रीम कोर्ट चिंता जता चुका है।अदालत ने सरकार से कहा है कि सोशल मीडिया पर ऐसी गैरकानूनी गैर जिम्मेदाराना हरकतों को नियंत्रित करने के लिए कठोर कानूनों का निर्माण किया जाए। अदालत ने राज्य सरकारों को निर्देशित किया है कि इस संबंध में वे जवाबदेह नोडल अधिकारी को नियुक्त करें। यह काफ हद तक सच है कि आभासी दुनिया का अत्यधिक प्रयोग नशे से भी ज्यादा घातक और दुष्प्रभावी है। यह मस्तिष्क को अवसाद, तनाव, बेचैनी, व्याकुलता और नकारात्मक सोच से भर देता है। यूजर्स को सोशल मीडिया एक तरह से "प्रोग्राम्ड" कर उनमें हर चीज पर सामाजिक प्रतिक्रिया की इच्छा में वृद्धि कर कुंठा से भरता है। अर्थात उसकी पोस्ट को कितने लोगों ने देखा। कितनों ने कमेंट किया। कितनों ने लाइक किया। यह मानसिक दबाव मोबाइल को ही घर बना देता है। इसका स्मरण शक्ति, चिंतन शक्ति और आत्म विश्वास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक संबंधों में दरार, रिश्तो में धोखाधड़ी, मनमुटाव और दूरियां बढ़ाता है। सोशल मीडिया ने अश्लीलता, अभद्रता, पोर्नोग्राफी, विकृत नग्नता , उन्मुक्त और अमर्यादित अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया है। उपभोक्ताओं की सूचना का अनधिकृत उपयोग भी किया है। यह मीडिया साइबर अपराध के रूप में नए-नए छल प्रपंच (हैकिंग और फिशिंग, साइबर बुलिंग, फेक न्यूज, हेट स्पीच, निजी डेटा चोरी, गोपनीयता भंग करने और निजता के अधिकार का उल्लंघन) के लिए भी उत्तरदायी है।बावजूद इसके सोशल मीडिया की बेपनाह मकबूलियत को देखते हुए न तो इसे सिरे से खारिज किया जा सकता है और न ही पूर्णतः निरापद माना जा सकता है। वस्तुतः इसके उपयोग के लिए संतुलित मानक प्रचालन प्रक्रिया और आदर्श आचरण संहिता की आवश्यकता है।

परिणाम

आज के दौर में एक इंसान की जरूरत है सिर्फ रोटी कपड़ा मकान तक ही सीमित नहीं है, इसमें एक आवश्यक वस्तु यानी कि Social Media की भी एंट्री हो चुकी है। आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो सोशल मीडिया से जुड़ा नहीं होगा। हर

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 5, May 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2021.0905023 |

इंसान सोशल मीडिया के किसी न किसी Platforms से जुड़ा ही है। अब चाहे वह Facebook हो या Twitter या फिर YouTube हो या इंस्टाग्राम। इन प्लेटफार्मर्स पर हर किसी ने अपनी हाजरी लगा दी है। सोशल मीडिया टूल आज के समय में काफी पसंद करने वाला टूल बन चुका है, जो कि काफी user Friendly भी है।कहा जा सकता है कि आज के इस सोशल मीडिया दौर में पूरी दुनिया आपकी उंगलियों के fingertips पर आ चुकि हैं। सोशल मीडिया का सबसे ज्यादा उपयोग करने वाला वर्ग युवा वर्ग है। सोशल मीडिया एक कमाई का साधन भी है। सोशल मीडिया के जरिए लोग अपने talent के बलबूते पर पैसे भी कमा रहे है। सोशल मीडिया माध्यम वह माध्यम है जिसमें आपने एक बार कदम रख दिया तो उससे बाहर आना और उसे यूज किए बिना रहना असंभव सा लगने लगता है।

सोशल मीडिया व्यक्तियों को जोड़ने का एक medium है। सोशल मीडिया या social network के जरिए लोग अपने बीच personal relations को स्थापित कर सकते है। लोग सोशल मीडिया का उपयोग अपने personal और commercial कार्यों दोनों के लिए किया जाता है। इसे सोशल मीडिया सर्विस के नाम से भी प्रसिद्ध है, जिसका मतलब है internet के माध्यम से अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ जोड़ना है। इसके माध्यम से आप एक दूसरे के साथ जानकारियों का आदान प्रदान कर सकते है। जैसे जैसे हम आधुनिक होते जा रहे हैं और हमारे जीवन में Technical सक्रियता होने लगी है। वैसी वैसी Social Media भी अपने पैर पसारने लगा है। भारत में Social Media का वर्चस्व में काफी विस्तार हो चुका है। बीते कुछ सालों में जैसे जैसे सोशल मीडिया लोगों के जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। वैसे वैसे इसका वर्चस्व काफी Strong हो गया है। भारतीय लोग अलग-अलग Social Networking Site पर अपना समय बिताने लगे हैं। कह सकते हैं कि आज के समय में लोगों को सोशल मीडिया की लत लग चुकी है। बिना सोशल मीडिया के इस्तेमाल किए बगैर आज के समय में कोई भी रह नहीं पाता है। अबे सोशल मीडिया के कई फायदे हैं तो काफी नुकसान भी है। फैलती सोशल मीडिया के दौर में लोगों की Privacy ही नहीं बची है। लोगों के जीवन में जो भी घटित होता है वह किसी भी Social Media Platform के जरिए लोगों तक सांझा करते थे हैं। सोशल मीडिया के चलते भारत में साइबर क्राइम भी पैर फैलाने लगा है। Digital India भारत सरकार का एक बेहद उम्दा कदम है पर जितना डिजिटल इंडिया का विस्तार होता जा रहा है उतना ही डिजिटल फ्रॉड भी बढ़ते जा रहे हैं। सोशल मीडिया का इस्तेमाल Indian Politics में भी काफी जोर शोर से किया जा रहा है। सोशल मीडिया केवल आप और हम तक ही सीमित नहीं है बल्कि बड़े बड़े राजनेता इसमें शामिल हो चुके है। सोशल मीडिया के जरिए Online Campaign Organise किए जाते हैं जोकि Election में काफी मदद करते हैं। देश में राजनीति और राजनेताओं की अलग-अलग गतिविधियों को सोशल मीडिया के माध्यम से जाना जा सकता है और वह काफी सुर्खियां भी बटोरते हैं। इसलिए यह कहना गलत नहीं ही होगा कि आने वाले समय में आम चुनावों को सोशल मीडिया काफी हद तक प्रभावित करेगा। सोशल मीडिया व्यापार के विस्तार के लिए भी एक अहम भूमिका निभाता है। सोशल मीडिया के जरिए लोग अपने व्यापार का विज्ञापन देते हैं और उन्हें मुनाफा भी मिलता है। क्योंकि इससे जुड़े कई लोगों को अपने आसपास के व्यापारओं के बारे में जानकारी मिलती है। सोशल मीडिया का वर्चस्व भारतीय लोगों के जीवन में काफी सक्रिय है यह कहना गलत नहीं होगा।सोशल मीडिया youth को काफी प्रभावित करता है। सोशल मीडिया का society पर काफी प्रभाव देखने को मिलता है। सोशल मीडिया सामाजिक मुद्दों पर लोगों को जागरूक करता है। सोशल मीडिया का इस्तेमाल आजकल समाज का ना सिर्फ ऊंचा वर्ग करता है, बल्कि यह हर वर्ग तक पहुंच चुका है। सोशल मीडिया ने समाज को digitally एक साथ जोड़ दिया है। सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों की सोच में भी काफी परिवर्तन देखने को मिल रहा है ।

समाज में अच्छे बदलाव देखने को भी मिल रहे हैं। जहां सोशल मीडिया के माध्यम से लोग एक दूसरे के साथ अपनी इंफॉर्मेशन शेयर कर पा रहे हैं। वहीं इसके साथ ही इंटरटेनमेंट वाले content से लोगों का मनोरंजन भी हो रहा है। सोशल मीडिया के कारण लोगों का एक दूसरे की समस्याओं को देखने का नजरिया भी बदल रहा है। सोशल मीडिया के जरिए समाज की बुराइयों को खत्म करने की मुहिम भी चलाई जाती है। अगर देश में कुछ गलत घटित हो जाता है तो सोशल मीडिया पर उसके खिलाफ आवाज उठाने वाला एक या दो व्यक्ति नहीं बल्कि लाखों-करोड़ों लोग एकजुट हो जाते हैं। ना सिर्फ एक देश के बल्कि पूरी दुनिया से। social media ने पूरी दुनिया को एक साथ जोड़ रखा है, जो कि एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। Social Media का उपयोग करने के लिए आपका कम से कम 18 वर्ष का होना अनिवार्य है। आप सोशल मीडिया पर किसी भी तरह के अपत्तिजनक पोस्ट, रिकोर्डिंग, फोटो upload नहीं कर सकते है। अगर आपके द्वारा कोई post किया गया है जिसको लेकर आपको हटाने के आदेश दिए गए है तो वह आपको 24 घंटे के भीतर हटाने होंगे। IT Act की धारा 66 ए पूरी तरह से सोशल मीडिया पर केंद्रित है और इसे नियंत्रित करती है। देश की शांति भंग करने के उद्देश्य से की गई भ्रमिक पोस्ट नहीं करने के आदेश है, ऐसा करने पर जेल भी हो सकती है।किसी महिलाएं के खिलाफ की गई आपत्तिजनक या Sexual पोस्ट करने पर भी आपके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। जो पोस्ट रुमर्स फैलाने का काम करते है उन्हें पर सोशल मीडिया पर पोस्ट करने से रोक है। निजता को मद्देनजर रखते हुए जानकारी को सांझा भी सोशल मीडिया को उपयोग करने का नियम है। सोशल मीडिया के फायदे बहुत ज्यादा है वहीं इसके नुकसान भी कम नहीं है। Social Media के आने के बाद से ही लोगों का सोशलाइजेशन कम हो गया है । उनका आमने सामने बात करना ही बंद हो गया है। सोशल मीडिया के उपयोग के चलते लोग अपने परिवार के साथ भी वक्त कम बिता रहे हैं, जिसके चलते रिश्तो में दूरियां पैदा हो रही हैं। वहीं सोशल मीडिया अकाउंट हैक हो जाने का भी खतरा बना रहता है। अगर Account Hack हो जाता है तो किसी व्यक्ति के खाते से पैसे और डेटा को आसानी इधर-उधर किया जा सकता है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 5, May 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2021.0905023 |

इसके चलते लोगों की निजता पर भी बन आती है। सोशल मीडिया की मदद से Fake News का भी आदान-प्रदान बहुत आसानी से हो रहा है।

यह एक सोशल मीडिया का सबसे बड़ा नुकसान है क्योंकि फेक न्यूज़ फैलाने के चलते लोगों की जिंदगी खराब हो जाती है। लोग अपने अनुसार न्यूज़ को मॉडिफाई कर सोशल मीडिया पर छोटे पोस्ट बनाकर वायरल कर देते हैं। वहीं Cyber bulling भी सोशल मीडिया का एक बहुत बड़ा नुकसान है। बीते कई सालों से साइबरबुलीइंग का शिकार विशेष रूप से बच्चे हो रहे हैं। फेक अकाउंट बनाकर दूसरे व्यक्ति को धमकाना सोशल मीडिया के जरिए आसानी से हो पा रहा है। इस साइबर बुलिंग के चलते लोग आत्महत्या तक कर लेते हैं जो कि समाज के लिए एक बहुत ही खतरनाक स्थिति पैदा करता है। सोशल मीडिया आज के समय में एक लत भी बन गई है जिसको छुड़ाना बहुत मुश्किल हो जाता है। हर समय सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने के चलते इसका असर स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। लोगों की Physical और Mental Health दोनों ही सोशल मीडिया के चलते प्रभावित हो रही है। सोशल मीडिया की वजह से लोगों का ज्यादा से ज्यादा समय बर्बाद होता है। पूरे वक्त सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक्टिव रहने के चलते हैं बाकी के अन्य कामों पर हम ध्यान नहीं दे पाते हैं, जिसके चलते समय की बर्बादी तो होती है बल्कि हम अपने कार्य को पूरी एफिशिएंसी से भी नहीं कर पाते हैं। सोशल मीडिया का उपयोग आज के दौर में तेजी से फैल रहा है इसमें कोई शक नहीं है। Social Media का इस्तेमाल ना सिर्फ एडल्ट बल्कि आज के टाइम में बच्चे भी बहुत कर रहे हैं। सोशल मीडिया के कारण बच्चों का इसका नुकसान भी होता है। एक रिसर्च के मुताबिक सोशल मीडिया के चलते बच्चों का Mental Health खराब होता है। इसके साथ ही बच्चों में सोशल मीडिया डिप्रेशन और साइबर बुलिंग भी होती है। सोशल मीडिया के उपयोग के चलते बच्चे की नींद में भी कमी देखने को मिलती है। जो बच्चे देर रात तक सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं उनकी नींद पूरी नहीं हो पाती है क्योंकि उन्हें सुबह स्कूल भी जाना होता है। सोशल मीडिया के उपयोग के चलते बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी प्रभाव पड़ता है, उन्हें Concentrated करने में काफी दिक्कत होती है। बच्चों में Internet की लत अधिकांश देखने को मिलती है, जिसका असर उनके दिनचर्या पर पड़ता है। बच्चे पूरा समय फोन के साथ ही बिताते हैं, जिसके कारण वह Outdoor Games पर भी ध्यान नहीं देते हैं, जिसके चलते उनकी फिजिकल हेल्थ पर भी काफी असर पड़ता है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म | Social Media Platforms

- फेसबुक (Facebook)
- यूट्यूब (YouTube)
- व्हाट्सएप(Whatsapp)
- इंस्टाग्राम (Instagram)
- स्नैपचैट (Snapchat)
- रेडिट (Reddit)
- पिनट्रस्ट (Pinterest)
- ट्विटर (Twitter)
- लिंक्डइन (LinkedIn)

निष्कर्ष

दैनिक जीवन में सोशल मीडिया का प्रभाव

• यह बहुत तेज गति से होने वाला संचार का माध्यम है
• यह जानकारी को एक ही जगह इकट्ठा करता है
• सरलता से समाचार प्रदान करता है
• सभी वर्गों के लिए है, जैसे कि शिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित वर्ग
• यहां किसी प्रकार से कोई भी व्यक्ति किसी भी कंटेंट का मालिक नहीं होता है।
• फोटो, वीडियो, सूचना, डॉक्यूमेंटस आदि को आसानी से शेयर किया जा सकता है

सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव

• यह बहुत सारी जानकारी प्रदान करता है जिनमें से बहुत सी जानकारी भ्रामक भी होती है।
• जानकारी को किसी भी प्रकार से तोड़-मरोड़कर पेश किया जा सकता है।
• किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर वह उकसावे वाली बनाई जा सकती है जिसका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं होता।
• यहां कंटेंट का कोई मालिक न होने से मूल स्रोत का अभाव होना।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 5, May 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2021.0905023 |

• प्राइवेसी पूर्णत: भंग हो जाती है।
• फोटो या वीडियो की एडिटिंग करके भ्रम फैला सकते हैं जिनके व्दारा कभी-कभी दंगे जैसी आशंका भी उत्पन्न हो जाती है।
• सायबर अपराध सोशल मीडिया से जुड़ी सबसे बड़ी समस्या है।

संदर्भ

1. "Social Media | Definition of Social Media by Merriam-Webster". Merriam-webster.com. Retrieved 2017-06-25.
2. ↑ "Social Media Overview - Communications". Communications.tufts.edu. Retrieved 2017-06-25.
3. ↑ Čeština (2015-10-31). "Positive and Negative Effects of Social Media on Society". LinkedIn. Retrieved 2017-06-25.
4. ↑ About the Author. "Mental Health and the Effects of Social Media" (in English). Psychology Today. Retrieved 2017-06-25. {{cite web}}: |author= has generic name (help)
5. शी, जहाँ ; रुई, हुवाक्सिया ; व्हिंस्तों, एंड्र बी. (फोर्थ कमिंग). "कंटेंट शेयरिंग इन अ सोशल ब्रॉड कास्टिंग एनवायरनमेंट एविडेंस फ्रॉम ट्विटर". मिस क्वार्टरली
6. ↑ जनसंदेश टाइम्स,5 जनवरी 2014, पृष्ठ संख्या:1 (पत्रिका ए टू ज़ेड लाइव), शीर्षक:आम आदमी की नई ताक़त बना सोशल मीडिया, लेखक: रवीन्द्र प्रभात
7. ↑ "फेसबुक पर ग्राहकों के साथ बातचीत के तरीको में सुधार". क्लियरट्रिप डॉट कॉम. मूल से 23 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 फरबरी 2014. |accessdate= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
8. ↑ फित्ज़गेराल्ड, बी. (25 मार्च 2013). "डिस अपियरिंग रोमनी". दि हफिंग्टन पोस्ट. मूल से पुरालेखित 13 नवंबर 2013. अभिगमन तिथि 25 मार्च 2013.
9. ↑ हिन्शिफ, डॉन. (22 फ़रवरी 2014). "आर सोशल मीडिया सिलोस होल्डिंग बेक बिज़नस". ZDNet.com. मूल से पुरालेखित 22 फ़रवरी 2014. अभिगमन तिथि 15 फरबरी 2014. |accessdate= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
10. ↑ अनिमेष, शर्मा. "सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करते समय मैलवेयर और फ़िशिंग से सुरक्षित रहें, एक क्लिक और आपका बैंक खाता शून्य". prabhasakshi.com. प्रभासाक्षी. अभिगमन तिथि 10 जनवरी 2021.
11. ↑ जनसंदेश टाइम्स,5 जनवरी 2014, पृष्ठ संख्या:1 (पत्रिका ए टू ज़ेड लाइव), शीर्षक:आम आदमी की नई ताक़त बना सोशल मीडिया, लेखक: रवीन्द्र प्रभात
12. ↑ शेर्विन आदम, आदम. "स्टाइल ओवर सब्सतांस: वायने रूनी क्लेअरेड ऑफ़ नाइके ट्विटर प्लग". दि इंडिपेंडेंट. मूल से 20 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 सितम्बर 2014.
13. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 23 जनवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 फ़रवरी 2014.
14. ↑ सोशल मीडिया और हिन्दी
15. ↑ "सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा का वर्चस्व". मूल से 21 नवंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 मार्च 2020.
16. ↑ "Why 'vernacular' is the big game for digital marketers". मूल से 20 फ़रवरी 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 मार्च 2020.
17. ↑ सोशल मीडिया पर छाया अपनी हिंदी का जादू (सितम्बर, 2021)
18. ↑ kyaa क्या सोशल मिडिया ने हिन्दी की ताकत बढ़ायी है?
19. ↑ Indian languages are storming the Internet in India, 9 out of 10 new users to be an Indian language user
20. ↑ "90% of new Internet users in India access content in Vernacular languages". मूल से 4 दिसंबर 2021 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 मई 2021.
21. ↑ By Passing The Language Barrier, The Rise Of The Vernacular Social Media Apps in India (दिस. २०२१)
22. ↑ Social Media needs to empower mother languages

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com